86 सूरए अत तारिक़

आपके द्वारा प्रदान की गई आयतें सूरह अत-तारिक़ (Surah At-Tariq) की प्रारंभिक आयतें हैं। अब हम इन आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन (Nyaya Darshan) की दृष्टि से क्रमशः करेंगे। हर आयत के लिए एक न्याय तत्त्व चुना जाएगा और प्रमाण, प्रमेय, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन के अनुसार आलोचना प्रस्तुत की जाएगी।

□ □□□ 1: "आसमान और रात को आने वाले की क़सम "

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana) – वैध ज्ञान स्रोत

□ न्याय दर्शन विश्लेषण :

- **प्रतिज्ञा (Pratijna):**
  ईश्वर आकाश और एक रहस्यमय रात्रिकालीन आगंतुक की क़सम खा रहा है।
- **हेतु (Hetu):**
  क़सम खाने की क्रिया से यह संकेत दिया गया है कि बात गंभीर है और जो आगे आएगा वह सत्य व अनिवार्य है।
- **उदाहरण (Udaharana):**
  न्याय दर्शन में सत्य का निर्धारण प्रत्यक्ष (perception), अनुमान (inference), शब्द (testimony) आदि से होता है, न कि क़सम से।
- **उपनय (Upanaya):**
  यदि कोई वक्तव्य केवल क़सम के सहारे सत्यापित किया जाए, तो वह प्रमाणिक ज्ञान नहीं कहलाता।
- **निगमन (Nigamana):**
  यह आयत प्रमाण तत्त्व के विपरीत है, क्योंकि क़सम सत्य का प्रमाण नहीं हो सकती; इससे तात्त्विक

सत्य का बोध नहीं होता।

□ आयत 2: "और तुमको क्या मालूम रात को आने वाला क्या है ?"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya) – ज्ञान का विषय

□ न्याय दर्शन विश्लेषण :

- **प्रतिज्ञा (Pratijna):**
  यह रात्रि आगंतुक रहस्यमय है और इसकी वास्तविकता मनुष्य नहीं जानता।
- **हेतु (Hetu):**
  यह आयत मानव की अज्ञानता पर आधारित है और उसे चकित करती है।
- **उदाहरण (Udaharana):**
  न्याय दर्शन में ज्ञान का उद्देश्य अज्ञान को दूर करना है, लेकिन यह आयत रहस्य को और बढ़ाती है, जिससे ज्ञान की प्रवृत्ति बाधित होती है।
- **उपनय (Upanaya):**
  यदि किसी ज्ञानविषय को प्रस्तुत कर उस पर रहस्य का पर्दा डाला जाए, तो वह न प्रमेय बनता है न बोधगम्य।
- **निगमन (Nigamana):**
  यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय तत्व के उद्देश्य–ज्ञान के विषय को स्पष्ट करना–का उल्लंघन करती है।

□ □□□ 3: "(वह) चमकता हुआ तारा है "

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana) – अनुमान द्वारा ज्ञान

□ न्याय दर्शन विश्लेषण :

- **प्रतिज्ञा (Pratijna):**
  रात्रिकालीन आगंतुक एक चमकता हुआ तारा है।
- **हेतु (Hetu):**
  यह अनुमान दर्शाता है कि अज्ञात वस्तु (रात को आने वाला) का तारे से संबंध है।
- **उदाहरण (Udaharana):**
  यदि हम किसी वस्तु को केवल चकाचौंध या दूरी के आधार पर पहचानें, जैसे कि कोई चमकता तारा है, तो वह अनुमान की सीमा में आता है, जो कई बार मिथ्या भी हो सकता है।
- **उपनय (Upanaya):**
  तारे का रहस्य या प्रतीकात्मकता स्पष्ट नहीं की गई, जिससे अनुमान अस्पष्ट और कमजोर हो जाता है।
- **निगमन (Nigamana):**
  यह कथन न्याय दर्शन के अनुमान तत्त्व की कसौटी पर स्पष्टता और निश्चितता में असफल है।

आयत **4: "(**इस बात की क़सम **)** कि कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस पर निगेहबान मुक़र्रर नहीं "

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti) – अटल संबंध

न्याय दर्शन विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा (Pratijna):**
  हर व्यक्ति पर एक पहरेदार (निगेहबान) नियुक्त है।
- **हेतु (Hetu):**
  ईश्वर की व्यवस्था का यह हिस्सा बताया गया है, लेकिन इसका अनुभवजन्य या दार्शनिक आधार नहीं दिया गया।
- **उदाहरण (Udaharana):**
  यदि यह निगेहबान दैवी हैं, तो उनकी व्याप्ति का प्रमाण चाहिए; क्या सभी लोग उन्हें अनुभव करते

हैं?

- **उपनय (Upanaya):**
  यदि कोई बात सर्वजन अनुभव में न आए, तो उसे सार्वभौम व्याप्ति नहीं दी जा सकती।

- **निगमन (Nigamana):**
  यह आयत न्याय दर्शन की व्याप्ति की कसौटी पर खरा नहीं उतरती, क्योंकि 'हर व्यक्ति पर निगेहबान' का कोई सार्वभौमिक अनुभव या प्रमाण नहीं है।

□ आयत **5:** "तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा हुआ है "

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu) – कारण

□ न्याय दर्शन विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा (Pratijna):**
  मनुष्य को अपने सृजन के मूल पर विचार करना चाहिए।

- **हेतु (Hetu):**
  यह आत्मबोध हेतु कहा गया है, लेकिन आगे कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है।

- **उदाहरण (Udaharana):**
  भारतीय दर्शन में सांख्य शास्त्र में प्रकृति-पुरुष सिद्धांत से सृष्टि की उत्पत्ति का गहन विश्लेषण किया गया है।

- **उपनय (Upanaya):**
  सिर्फ उत्पत्ति पर ध्यान देने को कहने से कोई तात्त्विक लाभ नहीं होता जब तक उसका कारण व उद्देश्य स्पष्ट न हो।

- **निगमन (Nigamana):**
  यह आयत सतही आत्मबोध को प्रेरित करती है, परंतु न्याय दर्शन की गूढ़ कारण मीमांसा से दूर है।

□ सारणी : तार्किक विश्लेषण

आयत संख्या	चुना गया तत्त्व	मुख्य आलोचना
1	**प्रमाण**	**क़सम को प्रमाण माना गया, जो न्याय दर्शन में अमान्य है।**
2	**प्रमेय**	**ज्ञान के विषय को रहस्य बनाकर प्रस्तुत किया गया, स्पष्टता का अभाव।**
3	**अनुमान**	**अनुमान स्पष्ट नहीं, तारा प्रतीक अस्पष्ट है।**
4	**व्याप्ति**	**हर व्यक्ति पर निगेहबान की बात अनुभव और प्रमाण से रहित है।**
5	**हेत्व**	**आत्मबोध हेतु कारण अस्पष्ट, तात्त्विक दृष्टिकोण अधूरा।**

□ समग्र निष्कर्ष :

इन आयतों में ज्ञान की प्राप्ति के साधनों की उपेक्षा हुई है। कहीं क़सम को प्रमाण बनाया गया है, कहीं रहस्य को प्रमेय, कहीं अनुमान और प्रतीक अस्पष्ट हैं, और कहीं तात्त्विक हेतुओं का अभाव है। न्याय दर्शन, सांख्य, और वैशेषिक दर्शन के अनुरूप सत्य की खोज इन आयतों से संभव नहीं प्रतीत होती।

यदि अगली आयतों का भी आप इसी प्रकार विश्लेषण चाहते हैं तो कृपया भेजें।

आपने सूरह अत-तारिक़ (Surah At-Tariq) आयत 6 से 10 तक प्रस्तुत की हैं। अब हम इन पाँच आयतों की *Nyaya Darshan* **की पद्धति से क्रमशः आलोचना करेंगे, जिसमें हर आयत के लिए एक उपयुक्त न्याय तत्व (Padartha) चुना गया है और विश्लेषण को Nyaya की पांच चरणीय संरचना में प्रस्तुत किया गया है: Pratijna (Proposition), Hetu (Reason), Udaharana (Example), Upanaya (Application), Nigamana (Conclusion)। हर आयत का विश्लेषण अलग किया गया है।**

□ आयत **6:** "वह उछलते हुए पानी **(**मनी **)** से पैदा हुआ है "

चुना गया तत्त्व: प्रमेय (Prameya) – जानने योग्य विषय

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  मनुष्य की उत्पत्ति एक "उछलते हुए पानी" से हुई है।

- **हेतु:**
  यह शारीरिक उत्पत्ति के वर्णन के रूप में है, जिसका उद्देश्य मानव की विनम्र उत्पत्ति को दिखाना है।

- **उदाहरण:**
  वैशेषिक दर्शन में पंचभौतिक शरीर की उत्पत्ति विभिन्न तत्वों से बताई गई है – जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश। केवल वीर्य से उत्पत्ति का उल्लेख करना विषय को अत्यधिक सीमित कर देता है।

- **उपनय:**
  यदि उत्पत्ति का कारण केवल वीर्य बताया जाए, तो यह सृष्टि की व्यापक प्रक्रिया, गर्भाधान, मातृभूमिका इत्यादि को नकारता है।

- **निगमन:**
  यह प्रमेय न्याय-दृष्टि से अधूरा है क्योंकि इसमें उत्पत्ति के सभी कारणों और तत्त्वों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

□ आयत **7:** "जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच में से निकलता है"

चुना गया तत्त्व: प्रमाण (Pramana) – सही ज्ञान का स्रोत

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  वीर्य पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है।

- **हेतु:**
  इस आयत में शारीरिक संरचना की जानकारी दी गई है, लेकिन यह आधुनिक चिकित्सा ज्ञान और प्रत्यक्ष अनुभव से विपरीत है।

- **उदाहरण:**
  आधुनिक शारीरिक विज्ञान के अनुसार शुक्र ग्रंथि (testes) शरीर के निचले भाग में स्थित होती है, न

कि छाती और पीठ के मध्य में।

- **उपनय:**
 यदि कोई जानकारी प्रत्यक्ष अनुभव और चिकित्सा ज्ञान के प्रतिकूल हो, तो वह प्रमाण नहीं हो सकती।

- **निगमन:**
 यह कथन प्रमाण तत्त्व के अनुसार अप्रमाणिक है क्योंकि यह प्रत्यक्ष और वैज्ञानिक ज्ञान के विरुद्ध है।

आयत **8:** "बेशक खुदा उसके दोबारा (पैदा) करने पर ज़रूर कुदरत रखता है "

चुना गया तत्त्व: अनुमान (Anumana) – तर्क द्वारा निष्कर्ष

न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
 ईश्वर मनुष्य को पुनः उत्पन्न करने में सक्षम है।

- **हेतु:**
 चूँकि उसने पहली बार उत्पन्न किया है, तो वह दोबारा भी कर सकता है।

- **उदाहरण:**
 न्याय दर्शन में अनुमान तभी वैध होता है जब उसमें हेतु, व्याप्ति, और व्यतिरेक की पुष्टि हो। यहाँ कोई प्रत्यक्ष अनुभव या निष्कर्ष नहीं दिया गया है।

- **उपनय:**
 यदि केवल पहली बार की उत्पत्ति को आधार बनाकर पुनः उत्पत्ति की बात कही जाए, तो यह केवल संभावना है, सिद्ध तथ्य नहीं।

- **निगमन:**
 यह अनुमान न्याय दर्शन की कसौटी पर अपूर्ण है क्योंकि यह आवश्यक व्याप्ति और अनुभव से

शून्य है।

□ आयत **9:** "जिस दिन दिलों के भेद जाँचे जाएँगे "

चुना गया तत्त्व: व्याप्ति (Vyapti) – अटल और सार्वभौम संबंध

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  क़यामत के दिन मनुष्य के दिलों के राज़ जाँचे जाएँगे।
- **हेतु:**
  यह कथन उस दिव्य न्याय की ओर संकेत करता है जो भविष्य में होगा।
- **उदाहरण:**
  न्याय दर्शन में किसी परिणाम की व्याप्ति तभी मानी जाती है जब वह सार्वभौम रूप से हर प्राणी पर लागू हो और प्रमाणिकता से सिद्ध हो सके।
- **उपनय:**
  'दिलों के भेद' जैसे अमूर्त अनुभव को नापना किसी प्रमाण या तात्त्विक सिद्धांत से परे है।
- **निगमन:**
  यह कथन व्याप्ति सिद्धांत के विपरीत है क्योंकि न तो इसका सार्वभौमिक प्रमाण है, न ही अनुभव।

□ आयत **10:** "तो **(**उस दिन **)** उसका न कुछ ज़ोर चलेगा और न कोई मददगार होगा "

चुना गया तत्त्व: उपमान (Upamana) – तुलना द्वारा ज्ञान

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  क़यामत के दिन न तो किसी का बल चलेगा, न कोई सहारा मिलेगा।
- **हेतु:**
  यह कथन भय उत्पन्न करने हेतु है और किसी पूर्व तुलनात्मक अनुभव से प्रेरित नहीं है।
- **उदाहरण:**
  भारतीय ग्रंथों में भी मृत्यु के बाद के कर्मफल का उल्लेख है, लेकिन वह वैदिक नियमों और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर आधारित होता है, जिसमें सुधार की संभावना होती है।
- **उपनय:**
  यदि कोई स्थिति एकदम निरुपाय दिखाई जाए बिना किसी सुधार की संभावना के, तो वह न्याय दर्शन की तुलना से ज्ञान की प्रणाली में असंतुलित होती है।
- **निगमन:**
  यह उपमान के द्वारा न्याय दर्शन की अपेक्षित स्पष्टता और तुल्यता प्रदान नहीं करता।

 सारणी **:** तार्किक समीक्षा सारांश

आयत संख्या	तत्त्व	आलोचना
6	**प्रमेय**	**उत्पत्ति का दृष्टिकोण एकपक्षीय, अपूर्ण है।**
7	**प्रमाण**	**शरीर-विज्ञान की असंगति, प्रत्यक्ष प्रमाण का अभाव।**
8	**अनुमान**	**अनुमान में व्याप्ति का अभाव, संभाव्यता पर आधारित।**
9	**व्याप्ति**	**भविष्य का अज्ञात अनुभव व्याप्ति नहीं कहलाता।**
10	**उपमान**	**किसी पूर्व अनुभव से तुलना नहीं, भय आधारित कल्पना।**

 समग्र निष्कर्ष **:**

इन आयतों में न्याय दर्शन के प्रमुख तत्त्वों का या तो अभाव है या उनका उल्लंघन किया गया है। आयत 7 का विज्ञान से टकराव, आयत 8-9 की अंध भविष्यवाणियाँ, और आयत 10 की निरुपायता तर्क, अनुभव और प्रमाणिकता की कसौटी पर कमजोर हैं।

यदि आप चाहें तो हम आगे की आयतों को भी इसी शैली में विश्लेषित कर सकते हैं।

आपके द्वारा प्रस्तुत की गई आयतें सूरह अत-तारिक़ (Surah At-Tariq) की आयत 11 से 15 तक हैं। अब हम इन पांचों आयतों का न्याय दर्शन की संरचना के अनुसार तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, जिसमें प्रत्येक आयत के लिए एक उपयुक्त न्याय तत्व (Padartha) चुना गया है। विश्लेषण न्याय दर्शन के पाँच अंगों – Pratijna (प्रतिज्ञा), Hetu (हेतु), Udaharana (उदाहरण), Upanaya (उपनय), Nigamana (निगमन) के अनुसार किया गया है।

आयत **11: "चक्कर (खाने) वाले आसमान की क़सम"**

चुना गया तत्व: प्रमाण (Pramana) – ज्ञान प्राप्त करने का साधन

न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  क़सम है उस चक्कर खाने वाले आसमान की।

- **हेतु:**
  यह आयत किसी ऐसी सत्ता की शपथ ले रही है जो स्पष्ट नहीं की गई – "चक्कर खाना" का अभिप्राय क्या है? क्या यह ग्रहों की गति है? या वातावरणीय परिक्रमा?

- **उदाहरण:**
  यदि यह खगोलीय गति का उल्लेख है, तो उसे प्रमाण सहित स्पष्ट किया जाना चाहिए। वैदिक साहित्य में सूर्य, चंद्र, नक्षत्रों की गतियों का प्रमाण सहित वर्णन है (ऋग्वेद 10.85.9)।

- **उपनय:**
  स्पष्टता और प्रत्यक्ष अनुभव के बिना 'क़सम' को ज्ञान का स्रोत नहीं माना जा सकता।

- **निगमन:**
  यह आयत प्रमाण की कसौटी पर असफल है क्योंकि यह अस्पष्ट रूप से प्रतिपादित है।

🔹 आयत **12:** "और फटने वाली (ज़मीन की क़सम)"

चुना गया तत्व: प्रमेय (Prameya) – जानने योग्य वस्तु

🔹 न्याय विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  क़सम उस ज़मीन की जो फटती है।

- **हेतु:**
  इसमें प्राकृतिक घटनाओं का उल्लेख है – जैसे बीज फटना, ज्वालामुखी फटना या भूकंप। परंतु यह भी अस्पष्ट है कि 'फटना' किस घटना की ओर संकेत करता है।

- **उदाहरण:**
  वैदिक परंपरा में पृथ्वी की उर्वरता को विस्तार से समझाया गया है (यजुर्वेद 3.10), न कि भयावहता के रूप में।

- **उपनय:**
  'फटने' को केवल शपथ के रूप में प्रयोग करना बिना किसी तात्त्विक या नैतिक शिक्षा के एक उबाऊ प्रतीक बन जाता है।

- **निगमन:**
  यह आयत भी प्रमेय के रूप में अपूर्ण है क्योंकि यह विषय का स्पष्टीकरण नहीं करती।

🔹 आयत **13:** "बेशक यह कुरान क़ौले फ़ैसल है"

चुना गया तत्व: प्रमाण और अनुमान (Pramana + Anumana)

🔹 न्याय विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा:**
  कुरान निर्णयात्मक वाणी (final verdict) है।

- **हेतुः**
  यदि कोई ग्रंथ अंतिम सत्य है, तो वह सार्वभौमिक प्रमाणों पर खरा उतरना चाहिए – तर्क, अनुभव, प्रमाण, उपमान, आदि।

- **उदाहरणः**
  गीता में भी अर्जुन को आदेश नहीं बल्कि तर्क के बाद विकल्प का अधिकार दिया गया है – "यथा इच्छसि तथा कुरु" (BG 18.63)।

- **उपनयः**
  केवल 'क़सम' के आधार पर किसी ग्रंथ को अंतिम सत्य नहीं माना जा सकता।

- **निगमनः**
  यह प्रमाण और अनुमान दोनों रूपों में असंतुलित है क्योंकि कोई वस्तुनिष्ठ परीक्षण नहीं दिया गया है।

□ आयत **14:** "और लग़ो नहीं है "

चुना गया तत्वः हेतु (Reason)

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञाः**
  यह कुरान कोई मज़ाक या हास्य नहीं है।

- **हेतुः**
  कहा गया कि यह गंभीर निर्णय की वाणी है, इसलिए इसे 'लाहव (व्यर्थ बात)' नहीं कहा जा सकता।

- **उदाहरणः**
  गंभीर ग्रंथ वह होते हैं जो स्पष्ट तर्क, नीति, न्याय और अनुभव पर आधारित हों। उपनिषद और गीता में ये सभी पाए जाते हैं।

- **उपनयः**
  केवल दावा करने से कोई ग्रंथ गंभीर नहीं बन जाता जब तक कि उसमें तर्क और आचरण की स्पष्ट

दिशा न हो।

- **निगमन:**
  यह कथन हेतु तत्त्व के आधार पर कमज़ोर है क्योंकि यह केवल निषेध करता है, बिना पुष्टि के।

□ आयत **15:** "बेशक ये कुफ़्फ़ार अपनी तदबीर कर रहे हैं"

चुना गया तत्व: व्याप्ति (Vyapti) – अटल संबंध

□ न्याय विश्लेषण **:**

- **प्रतिज्ञा:**
  काफिर (इनकार करने वाले) कुछ योजनाएँ बना रहे हैं।
- **हेतु:**
  यहाँ स्पष्ट रूप से उनके इरादों और कार्यों की ओर संकेत किया गया है।
- **उदाहरण:**
  न्याय दर्शन कहता है कि कार्य (कर्म) और इच्छा (इच्छा) के आधार पर किसी के आचरण का मूल्यांकन किया जाता है, न केवल विश्वास पर।
- **उपनय:**
  'काफ़िर' कहना और उनकी तदबीर को हीन बताना सामान्यीकरण (Overgeneralization) की श्रेणी में आता है।
- **निगमन:**
  यह व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करता है, क्योंकि सभी असहमत लोगों को एक जैसे इरादों से जोड़ देना अवैज्ञानिक है।

□ सारणी **:** न्याय दर्शन आधारित समीक्षा सारांश

आयत संख्या	तत्त्व	तात्त्विक आलोचना
11	प्रमाण	अस्पष्ट उपमा, अनुभव और विश्लेषण का अभाव
12	प्रमेय	फटने की क्रिया का अस्पष्ट उद्देश्य
13	अनुमान + प्रमाण	तर्क और परख के बिना 'अंतिम सत्य' का दावा
14	हेतु	बिना तात्त्विक आधार के निषेध
15	व्याप्ति	सामान्यीकरण और पूर्वग्रह

 न्याय सम्मत समग्र निष्कर्ष :

इन आयतों में 'क़सम' जैसी रचनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है, परंतु यह भाषा न्याय दर्शन की कसौटी पर अप्रमाणिक सिद्ध होती है, क्योंकि:

- **इनमें स्पष्ट तात्त्विक उद्देश्य नहीं है।**
- **प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं दिए गए हैं।**
- **धार्मिक विरोधियों पर सामान्य आरोप लगाना अनुचित व्याप्ति का उदाहरण है।**

इन सभी बिंदुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ये आयतें न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण, तर्क, उपमान, और प्रमेय की कसौटी पर पूर्णतः खरा नहीं उतरतीं।

यदि आप चाहें तो हम अगले श्लोकों की समीक्षा भी इसी Nyaya शास्त्रीय पद्धति से करते रहेंगे।

आपने प्रस्तुत की हैं सूरह अत-तारिक़ (Surah At-Tariq) की आयत 16-17। इन दोनों आयतों का विश्लेषण अब हम न्याय दर्शन की पाँच अंगीय पद्धति के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। इस बार हमने न्याय दर्शन के तत्वों में से उपमान (Upamana) और हेतु (Hetu) का प्रयोग किया है, क्योंकि यहाँ प्रतीकात्मक चेतावनी, विलंब और ईश्वर की शक्ति के प्रदर्शन की बात की गई है।

आयत **16:** "और मैं अपनी तरजी कर रहा हूँ "

चुना गया तत्व: उपमान (Upamana) - तुलनात्मक ज्ञान या उपमा से मिलने वाला बोध

 न्याय विश्लेषण :

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अल्लाह कहता है कि "मैं अपनी तरजी कर रहा हूँ" यानी कोई योजना या रणनीति बना रहा हूँ।

- **हेतु (Reason):**
  यह वाक्य ईश्वर की योजना को रहस्यपूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है, परन्तु इसे स्पष्ट नहीं करता कि वह तरजी (दिव्य योजना) किस पर आधारित है – न्याय पर, भय पर, या दया पर?

- **उदाहरण (Example):**
  वेदों में ईश्वर के कार्य ऋत (नियम), सत्य (सत्यता) और दया पर आधारित होते हैं – जैसे यजुर्वेद 40.8: "स: परायण आत्मा सत्यधर्म परायणः"1 वहाँ ईश्वर की योजना भी यथार्थ और ज्ञेय रूप में प्रकट की जाती है।

- **उपनय (Application):**
  जब ईश्वर की योजना को मनुष्य के लिए अदृश्य और रहस्यमय बना दिया जाए, तब वह तुलनात्मक रूप से यथार्थ विचार (realistic comparison) की दृष्टि से असंगत हो जाती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत उपमान तत्त्व की कसौटी पर अपूर्ण है, क्योंकि इसमें ईश्वर की योजना का कोई उपमेय तत्व या तुलनात्मक विश्लेषण नहीं दिया गया।

आयत **17:** "तो काफ़िरों को मोहलत दो , बस उनको थोड़ी सी मोहलत दो "

चुना गया तत्व: हेतु (Hetu) - कारण या तर्क

 न्याय विश्लेषण :

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  उन लोगों को मोहलत दो जो ईमान नहीं लाते – बस थोड़ी सी मोहलत।

- **हेतु (Reason):**
  यह आयत एक चेतावनी के रूप में दी गई है कि काफ़िरों को अभी के लिए छोड़ा जा रहा है लेकिन बाद में दंड मिलेगा।
- **उदाहरण (Example):**
  गीता (2.47) में भगवान कृष्ण कर्म का अधिकार देते हैं, न कि किसी पर दबाव या चेतावनी। वहाँ "यथा इच्छसि तथा कुरु" (18.63) कहकर स्वतंत्रता दी जाती है, न कि धमकी।
- **उपनय (Application):**
  'मोहलत' देना एक तरह का छिपा हुआ भय है – यह तर्क दर्शाता है कि जब कोई बात समझ में न आए, तो डर से दबा दिया जाए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह कथन हेतु तत्त्व की दृष्टि से असंतुलित है क्योंकि यह किसी तात्त्विक साक्ष्य या नैतिक शिक्षा के बिना केवल चेतावनी देता है।

सारणी : न्याय दर्शन आधारित समीक्षा सारांश

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	तात्त्विक समीक्षा
16	उपमान (Upamana)	ईश्वर की योजना अस्पष्ट, तुलनात्मक दृष्टि से अव्याख्येय
17	हेतु (Hetu)	चेतावनी तर्कहीन, केवल भय का निर्माण

न्यायसम्मत समग्र निष्कर्ष :

इन दोनों आयतों में:

- **ईश्वर की योजना को रहस्यमय रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे वह उपमान तत्व के अंतर्गत तात्त्विक तुलनाओं के अभाव में तर्कसंगत नहीं मानी जा सकती।**

- **दूसरी ओर, काफ़िरों को दी गई मोहलत की चेतावनी हेतु की दृष्टि से तर्कहीन और केवल भावनात्मक डर पैदा करने वाली प्रतीत होती है।**

अतः न्याय दर्शन के अनुसार:

यह दोनों आयतें न तात्त्विक ज्ञान देती हैं, न नैतिक दिशा, बल्कि ये केवल ईश्वर के क्रोध और रहस्य को उजागर करती हैं, जो कि सर्वबोधक, न्यायप्रिय और निरपेक्ष परमात्मा की धारणा के विपरीत है।

यदि आप चाहें तो हम अगली सूरह अथवा आयत की समीक्षा भी इसी Nyaya Darshan आधारित संरचना में जारी रख सकते हैं।